

  
**OFFICE OF THE DIRECTOR**  
**CENTRAL SANSKRIT UNIVERSITY**  
**SHREE SADASHIVA CAMPUS, PURI(ODISHA).**

L. NO. V-5/22-23/2063

Dt 10.10.2022

To

All H.O.Ds, CSU,SSc,Puri./Concerned Guides,CSU,SSC  
Puri.

Please fine closed herewith Letter No.CSU/GGN JHA CAMPUS/R& P-01/2022/44/dtd.30.09.22 received from Dr. Devadutt Sarode, Co-ordinator, Ganga Nath Jha Campus, Prayagaraj(U.P.) and Hon'ble Vice Chancellor letter to all faculty members alongwith list of Research Scholars 2020-21 for taking further necessary action accordingly as per mentioned letters and intimate the same to their concerned Research Scholars accordingly. The points pointed by the Hon'ble Vice Chancellor's letter should be strictly followed.

  
(PROF.K.MISHRA)  
**DIRECTOR**  
**CENTRAL SANSKRIT UNIVERSITY**  
**SHREE SADASHIVA CAMPUS, PURI(ODISHA)**

Copy for information and necessary action accordingly to:-

1. Prof.A.K.Nanda, Co-ordinator, Research Cell, CSU,SSC,Puri .
2. Convener, IQAC/NAAC,CSU,SSC,Puri.

3. V-5 file / *Compro Website*



MMP.  
Prof. A-K-Nand  
30/09/2022

DIRECTOR SHRI SADASHIV CAMPUS <director-puri@csu.co.in>

शोधप्रस्तावनां प्रस्तुतिसन्दर्भे

1 message

Research & Development Cell <rdc@csu.co.in>

Fri, Sep 30, 2022 at 5:48 PM

To: director-puri@csu.co.in, osd\_vc@csu.co.in, director-academic@csu.co.in

Research Development Cell

Central Sanskrit University

Ganganath Jha Campus,

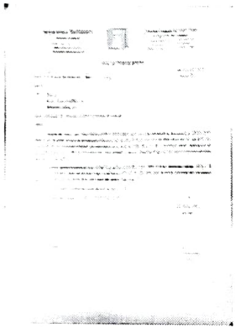
Azad Park,

Prayagraj-211002

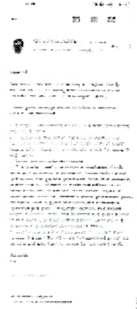
0532-2460956 (Fax), 0532-2460957

<http://www.csu-prayagraj.res.in/>

4 attachments



puri.jpeg  
609K



vcsir.jpg  
98K

SHRI SADASHIV PDF.pdf  
225K

thurst aria.pdf  
397K

## केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

गंगानाथ झा परिसर

चन्द्रशेखर आजाद पार्क, प्रयागराज (उ.प्र.)

(संसद: अधिनियमन संस्थापित:)

भारतशासनस्य शिक्षामन्त्रालयाधीन:



## Central Sanskrit University Ganganath Jha Campus

Chandra Shekhar Azad Park, Prayagraj, U.P.

(Established by an Act of Parliament)

Under the Ministry of Education, Govt. of India

## शोध एवं विकास प्रकोष्ठ

Tel. 0532-2977532

30.09.2022

E-mail: rdc@csu.co.in

पत्रांक- के.सं.वि./गं.ना.झा परिसर/शो.प्र. ०६/2022/ ५५

सेवा में,

निदेशक

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

श्रीसदाशिव परिसर, पुरी

विषय - शोधच्छात्रों के शोधप्रस्ताव प्रस्तुति का प्रतिवेदन के सन्दर्भ में।

महोदय,

केन्द्रीय शोध मण्डल द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति के निर्णयानुसार 2020-2021 के शोधच्छात्रों के शोधप्रस्तावों का प्रतिवेदन प्रेषित किया जा रहा है। कृपया प्रतिवेदन के परामर्शानुसार शोधच्छात्रों को इस दिशा में क्रियान्वयन करने का निर्देश प्रदान करने का कष्ट करेंगे। जिन शोधच्छात्रों को शोधशीर्षकपरिवर्तनपूर्वक नूतन शोधप्रस्ताव प्रस्तुत करने का निर्देश दिया गया है, उन्हें विशेषज्ञ समिति, विश्वविद्यालय की शोधनीति निर्धारकों तथा माननीय कुलपति महोदय द्वारा निर्दिष्ट बिन्दुओं पर (संलग्न) शोधशीर्षक निश्चित कर शोध प्रस्ताव प्रस्तुत करने का निर्देश प्रदान करने का कष्ट करेंगे।

माननीय कुलपति महोदय के द्वारा निर्दिष्ट बिन्दु क्रमांक पञ्चम के अनुसार जिन छात्रों का शोधप्रारूप स्वीकृत नहीं हुआ है उन छात्रों को तीन से छः मास तक केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय दिल्ली की शोध नीति प्रपत्र में निर्दिष्ट अनुसन्धान की प्राथमिकता एवं प्रधानक्षेत्र के अन्तर्गत गवेषण कार्य जारी रखने का परामर्श दिया गया है।

माननीय कुलपति महोदय द्वारा निर्दिष्ट बिन्दुओं का पत्र संलग्न है।

यह पत्र सक्षम अधिकारी के निर्देश पर निर्गत किया गया है।

(प्रो. देवदत्त सरोदे)

संयोजक

प्रतिलिपि -

1. विशेषाधिकारी कुलपति महोदय
2. अधिष्ठाता शैक्षणिक, के.सं.वि. दिल्ली
3. सहायक निदेशक, शोध, के.सं.वि. दिल्ली
4. सन्बद्ध सञ्चिका

(प्रो. देवदत्त सरोदे)

संयोजक



Vice Chancellor C... 6:56 am  
to me, ACADEMIC, Bhop... ▾



Dear All

Namaste. I am sorry for writing in English. Kindly excuse me for not being able to communicate in Sanskrit as I am poor in Devanagari Typing.

I have gone through the list of titles of research topics. My feedback

1. Except a few themes most of the titles are outside the priority area.
2. Titles show that either the area of study is too narrow or confined to one particular work or poetic piece which does not provide any scope for research with verity.
3. Some are too wide and vague
4. The guides need orientation immediately. Kindly arrange orientation of Research Guides with current guidelines and general guidelines. First time research guides are not allowed to supervise without such orientation and online test certification : topics of orientation could be : research policy, guidelines, good research, how to guide and formulate a research question and plan. Language aspects, procedural aspects, how to work with students and publications in that particular area. Admission to Submission & evaluation procedure and research ethics.
5. Lastly please allow these students to start their research area if the titles are not approved as per our priority and ask them to revise for next 3-6 months.

Regards  
SV

Show quoted text

—  
With warm regards  
Office of the Vicechancellor

Researcher	Guide	Discipline	Category	Topic	Experts' Comments & Suggestions	Conclusion
HEEPAK KUMAR RAWAT	Prof. Nirmala Panigrahi	Shiksha Shashtra	Shiksha Sabitara Pun. Category	न. ताभ्यां शैक्षिकमूल्यानां निश्लेषणात्मकमध्ययनम्	<p>i. भाषा शुद्धा वर्तते। निश्लेषणदोषाः दृष्टाः।</p> <p>ii. शोधस्य औचित्यं स्पष्टतया न निरूपितम्।</p> <p>iii. अनुसन्धानस्योद्देश्यानि अपि च विषयविस्तरः अति विशालः अस्ति।</p> <p>iv. उद्देश्येषु पुनरुक्तिदोषो विद्यते।</p> <p>v. अनुसन्धानसीमाङ्कनं न निर्दिष्टम्।</p> <p>vi. उद्देश्येषु अपि च विभक्ताध्यायेषु अध्यायबिन्दुषु सम्बद्धता नास्ति।</p> <p>vii. शोधस्य उपयोगिता निरूपणीया।</p>	<p>1- शोधशीर्षकं शैक्षिकसामाजिकोपयोगितादृष्ट्या परिष्कृत्य परिवर्त्य च शोधविधिमनुसृत्य नूतनशांभप्रस्तावः प्रस्तोतव्यः।</p> <p>2. शोधप्रस्तावः यथानिर्देशं संशोध्य विस्तरेण अस्यां दिशि कृतानां कार्याणां सर्वेक्षणविवरणेन सह प्रस्तोतव्यः। शोधकार्यस्य उपयोगितादृष्ट्या विस्तृतं विवरणमवश्यं प्रस्तोतव्यम्।</p>

2					<p>पश्चिमबङ्गराज्यम्। जङ्गलमहलस्थोत्तमपञ्चमिक च्छात्राणाम् एकविंशतितमशताब्दीयकौश लानि प्रति जागरूकतायाः अध्ययनम्</p>	<p>i. जागरूकताविषये बहूनि अध्ययनानि जानीत। ii. शोधप्रस्तावे संशोधनमावश्यकम्। iii. एकविंशतितमशताब्दीयकौशलानि आदाय अन्यदृशा अनुसन्धानं विधीयताम्। येन शासननीतिनिर्धारणे उपादेयपूर्णं स्यात्।</p>	<p>1. शोधशीर्षकं शैक्षिकसामाजिकोपयोगितादृष्ट्या परिष्कृत्य परिवर्त्य च शोधविधिमनुसृत्य नूतनशोधप्रस्तावः प्रस्तोतव्यः। 2. शोधप्रस्तावः यथानिर्देशं संशोध्य विस्तरेण अस्या दिशि कृतानां कार्याणां सर्वेक्षणविवरणेन सह प्रस्तोतव्यः। शोधकार्यस्य उपयोगितादृष्ट्या विस्तृतं विवरणमवश्यं प्रस्तोतव्यम्।</p>
---	--	--	--	--	--	--	--

ARCHANA  
MANJARI  
PRADHAN

Prof. Rama  
Kant Mishra

Shri  
Sadashiv  
Puri Campus

राधानाथरायकृतिषु  
सामाजिकतायाः समीक्षणम्

i. Topic is not relevant neither related to  
Sanskrit Education Discipline.

शोधगीर्णकः सर्वथा परवर्तनीयम् । परिवर्तितस्य शोधशीर्षकस्य  
नूतनप्रस्तावः शोधविधिमनुसृत्य प्रस्तोतव्यः ।

K. AR 1971	Prof. Rama Kant Mishra	Shiksha Shashtra	Shri Sadashiv Puri Campus	भाषाशास्त्रशिवमोचने सांगवानसमुच्चयविकासे च हितापदेशस्य समाक्षणात्मकमध्ययनम्	<p>i. शोधप्रस्तावः दोषभूयिष्ठं विषयाभाषा अशुद्धा विद्यते।</p> <p>ii. शोधशीर्षके उद्देशेषु च सम्बन्धौचित्यं स्यात्। शीर्षकानुगुणं शोधविधिर्भवेत्।</p> <p>iii. अध्ययनस्य औचित्यं सम्यक् निरूपणीयम्।</p> <p>iv. अपूर्वः शोध इति प्रतिपादनीयम्।</p>	शोधशीर्षकं सर्वथा परिवर्तनीयम्। परिवर्तितस्य शोधशीर्षकस्य नूतनप्रस्तावः शोधविधिमनुसृत्य प्रस्तानव्यः।
---------------	---------------------------	------------------	---------------------------------	--	---	--



5	SWATI REKHA SAHOO	K	Shashtra	Shri Sadashiv Puri Campus	भासनाटकेषु सामाजिकतन्त्राणि समीक्षात्मकमध्ययनम्	<p>i. प्रारूपे भाषा प्रायः शुद्धा, द्वित्रा दोषाः सन्ति ।</p> <p>ii. अस्मिन् अनुसन्धाने शोधप्रश्नाः भवन्ति, न तु प्राकल्पनाः।</p> <p>iii. अध्ययनस्य फलनिष्पत्तिः स्पष्टा नास्ति।</p> <p>iv. अत्र अनुसन्धाने उपकरणानि असम्बद्धानि सन्ति।</p> <p>v. अध्ययनकलेवरः विशालः विद्यते।</p> <p>अनुसन्धानविधिः अयुक्तः अस्ति।</p> <p>vi. शोधप्रस्तावः समाजशास्त्रीयो वर्तते । प्रस्तावस्य शैक्षिकोपयोगिता निरूपणीया ।</p>	<p>1. शोधार्थकं शैक्षिकसामाजिकोपयोगितादृष्ट्या परिष्कृत्य प्रस्तोतव्यम् ।</p> <p>न शास्त्राधिगमनसृष्ट्य नूतनशोधप्रस्तावः प्रस्तोतव्यः ।</p> <p>2. शोधप्रस्तावः यथानिर्देशं संशोध्य विस्तरेण अस्यां दिशि कुर्वन्तः कार्याणां सर्वेक्षणविवरणेन सह प्रस्तोतव्यः । शोधकार्यस्य उपयोगितादृष्ट्या विस्तृतं विवरणमवश्यं प्रस्तोतव्यम् ।</p>
---	-------------------	---	----------	---------------------------	---	---	--

Ramakant Sa	Dr. Shushant Kumar Rai	Shiksha Shastri	शिक्षण विभाग	आदिशाराज्यस्य माध्यमिकसंस्कृतशिक्षकाणां जीवनसन्तुष्टेः एकमध्ययनम्	i. अनुसन्धानस्योद्योगितावीनानि न सन्ति। ii. अध्यायविवरणं स्पष्टं नास्ति। iii. अध्ययनस्य औचित्यं न स्पष्टं निरूपितम्। iv. उपकरणस्य प्रमाणीकरणं कथं विधीयते तन्नोक्तम्।	1- शोधशीर्षकं जैक्षित्तमार्गविक्रमपयोगितादृष्ट्या परिष्कृत्य परिवर्त्य च शोधविधिमनुसृत्य नूतनप्रस्तावः प्रस्तोतव्यः। 2. शोधप्रस्तावः यथानिर्देशं मज्जाध्य विस्तरेण अस्यां दिशि कृतानां कार्याणां सर्वेक्षणविवरणेन सह प्रस्तोतव्यः। शोधकार्यस्य उपयोगितादृष्ट्या विस्तृतं विवरणमवश्यं प्रस्तोतव्यम्।
-------------	---------------------------	-----------------	-----------------	---	--	---

	Prof. Shambhu Nath Mahalik	Adwait Vedant	Shri Sadashiv Puri Campus	कविश्रीपरशुराममहापात्रप्रणीत- 'भग्नकोणांक' ग्रन्थस्य स्मृतिप्रस्थानदृष्ट्या पर्यालोचनम्	i. इह शोधप्रस्तावे प्राक्कल्पनायाः औचित्यं नास्ति। ii. शोधोद्देश्यानि व्यवस्थितानि न सन्ति। iii. शोधानुसन्धानस्य उपयोगिता का इति निरूपणीया। iv. मूलग्रन्थः उत्कलीयभाषायां विद्यते। v. क्वचित्-क्वचित् भाषाया अशुद्ध्यः दृष्टाः, शोधसंक्षिप्तिकायां स्पष्टता नास्ति।	शोधशीर्षकं सर्वथा परिवर्तनीयम्। परिवर्तितस्य शोधशीर्षकस्य नूतनप्रस्तावः शोधविधिमनुसृत्य प्रस्तोतव्यः।
--	----------------------------------	---------------	---------------------------------	---	---	--

8	GITUKRUSHNA PATI	Prof Ramakant Mishra		Shri Sadashiv Puri Campus	तैत्तिरीयोपनिषद्दृष्ट्या पञ्चकोशात्मकव्यक्तित्वविका सः - एकमध्ययनम्	<p>i. अनुसन्धानस्योचित्यं सम्यक् न निरूपितम्।  ii. अनुसन्धानस्योद्देश्यानि न लिखितानि सन्ति।  iii. अनुसन्धानविधिः नोल्लिखितः।  iv. अनुसन्धानसीमाङ्कनं न निर्दिष्टम्।  v. मनोमय-विज्ञानमय-कोशयोः विवरणे  असम्बद्धविवरणं प्रदत्तम्।  vi. अत्र शोधप्रस्तावे तैत्तिरीयोपनिषदः व्यक्तित्वविषये  एकम् अपि प्रमाणम् उद्धरणं वा नोपन्यस्तम्।  vii. विषये स्पष्टता नास्ति, तैत्तिरीयोपनिषदः एकमपि  उदाहरणं नैव दत्तम्, प्रस्तुतसिद्धान्ते शास्त्रीयता नास्ति।</p>	<p>1- शोधप्रस्ताव शैक्षिकसामाजिकोपयोगितादृष्ट्या परिष्कृत्य परिष्कृत्य  च शोधान्नामनुसृत्य नूतनशोधप्रस्तावः प्रस्तोतव्यः ।  2.शोधप्रस्तावः यथानिर्देशं संशोध्य विस्तरेण अस्यां दिशि कृताना  कार्याणां सर्वेक्षणविवरणेन सह प्रस्तोतव्यः । शोधकार्यस्य  उपयोगितादृष्ट्या विस्तृतं विवरणमवश्यं प्रस्तोतव्यम् ।</p>
---	---------------------	----------------------------	--	---------------------------------	---	--	---

NAIK

Prof.  
Shambhunath  
Mahalik

Adwait Vedant

Shri  
Sadashiv  
Puri Campus

इतिहास विद्याना गुरु-  
शिष्य सम्प्रदायाश्च  
समीक्षात्मकमध्ययनम्

- i. उद्देश्यानि लेखनीयानि।
- ii. प्रयोजनमस्पष्टं विद्यते।
- iii. अत्र पूर्वपिक्षया किमपूर्वं विधायते इति उल्लेखनीयम्।
- iv. सम्भावितशोधफलं न निर्दिष्टम्।
- vi. बहुषु स्थलेषु भाषायाम् अशुद्धयः दृष्टाः।
- vii. शोधसंक्षिप्तिकायाम् इतोऽपि स्पष्टता अपेक्षिता।

- 1- शोधशीर्षकं शैक्षिकसामाजिक उपयोगितादृष्ट्या परिष्कृत्य परिवर्त्य च शोधविधिमनुसृत्य नूतनशोधप्रस्तावः प्रस्तोतव्यः।
2. शोधप्रस्तावः यथानिर्देशं संज्ञाध्याय विस्तरेण अस्यां दिशि कृतानां कार्याणां सर्वेक्षणविवरणेन सह प्रस्तोतव्यः। शोधकार्यस्य उपयोगितादृष्ट्या विस्तृतं विवरणमवश्यं प्रस्तोतव्यम्।

10	GOPAL KRUSHNA MISHRA	Prof. Dr. Khageshwar Mishra	Shri Sadashiv Puri Campus	पण्डितश्रीचन्द्रमाधवझाशी णीत-प्रायश्चित्तनिर्णयस्य समीक्षात्मकं सम्पादनम्	मातृकासम्पादनशोधकार्यमिदम् । ii. विषयः समीचीनः । मातृकायाः केषाञ्चन पृष्ठाना प्रतिलिपयः संयोज्याः ।	1. जीर्णकं प्राथमिकमिकदृष्ट्या स्वीक्रियते । ज्ञानप्र थानदेश संशोध्य विस्तरेण अस्यां दिशि कृतानां कार्याणां मवेक्षणविवरणेन सह प्रस्तोतव्यः । शोधकार्यस्य उपयोगितादृष्ट्या विस्तृतं विवरणमवश्यं प्रस्तोतव्यम् । 2. स्वीकृते शोधप्रस्तावे शोधच्छात्रः मार्गदर्शकः वा अनुसन्धानकाले इतोऽपि परिष्कारार्थं सयुक्ति प्रस्तावं कर्तुमर्हति । शोधविकाससमितिः अत्र औचित्यं दृष्ट्वा निर्णयार्थं यथाविधि प्रक्रियाम् अग्रेसारयिष्यति । 3. स्वीकृते शोधशीर्षकेऽपि विश्वविद्यालयस्य अधिकृता विशेषज्ञसमितिः शोधकार्यार्थम् इतोऽपि गुणवत्तामानेतुं परिष्कारार्थम् अनुसन्धानकालेऽपि निर्देष्टुमर्हति ।
----	-------------------------	-----------------------------------	---------------------------------	---	---	---

PRIYANKA NAYAK	Prof. Lalit Kumar Sahoo	Dhanu	Sanskrit Faculty Campus	स्मृतिषु नारी - एकमध्ययनम्	<p>i. शोधप्रश्नाद्यस्य त्वात्पयोगिता न निरूपिता ।</p> <p>ii. शोधविधिः न उल्लिखितः।</p> <p>iii. शोधनिष्पत्तिः न दर्शिता।</p> <p>iv. नेदम् अनुसन्धानम् अपूर्वं प्रतिभाति।</p> <p>v. शोधोद्देशानि न लिखितानि।</p> <p>विषयोऽतीवसाधारणः, भाषायां शैथिल्यमस्ति, विषयः समीचीनो न प्रतिभाति।</p> <p>vi. साम्प्रतिककाले नारीविषयकस्मृतिसन्दर्भनादाय हेतुवादिभिः स्मृतय आक्षिप्यन्ते ।</p> <p>प्रामाणिकस्मृतिसन्दर्भान् आदाय तटस्थभावेन आक्षेपाणां समाधानं विधेयम् । एवंविधानुसन्धानेन शास्त्रप्रतिष्ठा जायते ।</p>	शोधशीर्षकं सर्वथा परिचर्तव्यम् । परिवर्तितस्य शोधशीर्षकस्य नूतनप्रस्तावः शोधविधिमनुसृत्य प्रस्तोतव्यः ।
----------------	-------------------------	-------	----------------------------	----------------------------	---	---

Prof. Lalit  
Kumar Sahoo

Dharma Shastra

Shri  
Sadashiv  
Puri Campusबुद्धिनाशक शोधननिर्णयस्य  
समीक्षात्मक समादहनम्

- i. विषयोऽयं समुचितो वर्तते। शोधप्रश्नोऽपि सुष्ठु वर्तते।
- ii. भाषा शुद्धा वर्तते, द्वित्राः टङ्कणदोषाः दृष्टाः।
- iii. शोधप्रारूपस्य सर्वेऽपि बिन्दवो गृहीताः।
- iv. मातृकायाः केषाञ्चित् पृष्ठानां प्रतिलिपयः संयोज्याः।
- v. विषयस्समीचीनः।
- vi. पूर्व कृतानां शोधकार्याणां विवरणं न प्रदत्तम्।

- 1- शोधशीर्षकं प्राथमिकमिकदृष्ट्या मर्यादाव्यतिरेकतया प्रस्तावः यथानिर्देशं संशोध्य विस्तरेण अस्यां दिशि कृतानां कार्याणां सर्वेक्षणविवरणेन सह प्रस्तोतव्यः। शोधकार्यस्य उपयोगितादृष्ट्या विस्तृतं विवरणमवश्यं प्रस्तोतव्यम्।
2. स्वीकृते शोधप्रस्तावे शोधच्छात्रः मार्गदर्शकः वा अनुसन्धानकाले इतोऽपि परिष्कारार्थं सयुक्ति प्रस्तावं कर्तुमर्हति। शोधविकाससमितिः अत्र औचित्यं दृष्ट्वा निर्णयार्थं यथाविधि प्रक्रियाम् अग्रेसारयिष्यति।
3. स्वीकृते शोधशीर्षकेऽपि विश्वविद्यालयस्य अधिकृता विशेषज्ञसमितिः शोधकार्यार्थम् इतोऽपि गुणवत्तामानेतुं परिष्कारार्थम् अनुसन्धानकालेऽपि निर्देष्टुमर्हति।



SMARAKI PRIYADARSHINI	Prof. Aarti Kumar Name	Shri Sadashiv Puri Campus	धर्मशास्त्रानुसारं प्राचीनशिक्षानीतिना सह आधुनिकराष्ट्रियशिक्षानीतेः तुलनात्मकमध्ययनम्	i. विद्यया न नवीनो वर्तते । शोधप्रारूपस्य सर्वे बिन्दवः नव गृहीताः। ii. टङ्कणदोषा वर्तन्ते। iii. शोधकैः 'नीतिना' इत्यशुद्धं पदं प्रयुक्तम्, विषये स्पष्टत्वम् अपेक्षितम्। iv. सन्दर्भग्रन्थसूच्यां प्रकाशकस्य नाम न वर्तते।	1. शोधकार्यस्य शैक्षिकसामाजिकोपयोगितादृष्ट्या परिष्कृत्य परि च शोधकार्यमनुसृत्य नूतनशोधप्रस्तावः प्रस्तोतव्यः । 2. शोधप्रस्तावः यथानिर्देशं संशोध्य विस्तरेण अस्यां दिशि कृताना कार्याणां सर्वेक्षणविवरणेन सह प्रस्तोतव्यः । शोधकार्यस्य उपयोगितादृष्ट्या विस्तृतं विवरणमवश्यं प्रस्तोतव्यम् ।
--------------------------	---------------------------	---------------------------------	---	--	--

Sl. No.	Subject	Faculty	Department	Topic	Remarks	
	RESEARCH OUT	Prof. Lalit Kumar Sahoo	Dharma Shastra	Shri Sadash Puri Campus मातृकायायराघवोपाध्याय योगयोगतथितत्त्वनिर्णयस्य समीक्षात्मक सम्पादनम्	<p>i. मातृकासम्पादनात्मकशास्त्रम् ।</p> <p>ii. उद्देश्यानि लेखनीयानि।</p> <p>iii. सम्भावितशोधनिष्पत्तिः Research Out Come. लेखनीया।</p> <p>iv. टङ्कणदोषः परिहार्यः ।</p> <p>v. मातृकायाः केषाञ्चित् पृष्ठानां प्रतिलिपयः संयोज्याः।</p> <p>vi. अस्याः मातृकायाः इदं प्राथम्येन सम्पादनं क्रियते इति निरूपणीयम्।</p> <p>vi. विषयः समीचीनः।</p>	<p>1- शोधशीर्षकं प्राथमिकमिति निर्णयितं क्रियते । शोधप्रस्ताव यथानिर्देशं संशोध्य विस्तरेण प्रस्तावनायां कृतानां कार्याणां सर्वेक्षणविवरणेन सह प्रस्तोतव्यम् । शोधकार्यस्य उपयोगितात् विस्तृतं विवरणमवश्यं प्रस्तोतव्यम् ।</p> <p>2. स्वीकृते शोधप्रस्तावे शोधच्छात्रः मार्गदर्शकः वा अनुसन्धानकाले इतोऽपि परिष्कारार्थं सयुक्ति प्रस्तावं कर्तुमर्हति शोधविकाससमितिः अत्र औचित्यं दृष्ट्वा निर्णयार्थं यथाविधि प्रक्रियाम् अग्रेसारयिष्यति ।</p> <p>3. स्वीकृते शोधशीर्षकेऽपि विश्वविद्यालयस्य अधिकृता विशेषज्ञसमितिः शोधकार्यार्थम् इतोऽपि गुणवत्तामानेतुं परिष्कृतम् अनुसन्धानकालेऽपि निर्देष्टुमर्हति ।</p>

15	DILLIP KUMAR BEHERA	Dr. Gopinath Jana	Shri Sadashiv Puri Campus	न्यायमञ्जरीन्यायभूषणयोः तुलनात्मकमध्ययनम्	i. इदमनुसन्धानमपूर्वमिति विषये विस्तरेण विवरणं देयम् । ii. अस्य अध्ययनस्य उद्देश्यानि न लिखितानि सन्ति। iii. शोधविधिः न उल्लिखितः। iv. अनयोः ग्रन्थयोः तुलनात्मकाध्ययनस्य औचित्यं दर्शनीयम् । v. एतद्विषये कृतानां कार्याणां सूक्ष्मतया अन्वेषणं कर्तव्यम् । vi. बहुषु स्थलेषु भाषायाः अशुद्धिः दृष्टा, किञ्चित् नावीन्यमपेक्षते।	शोधशीर्षकः सर्वथा परिवर्तनीयम् । परिवर्तितस्य शोधशीर्षकस्य नूतनप्रस्तावः शोधविधिमनुसृत्य प्रस्तोतव्यः ।
----	------------------------	----------------------	---------------------------------	--	--	--

SUCHISMITA PALEI	Prof. Makhlesh Kumar	Purandhar	विष्णुधर्मोत्तरपुराणदिशा उत्कलीयमूर्तिकलायाः समीक्षणात्मकमध्ययनम्	i. शोधप्रारूपमिदं समाप्तं वर्तते। ii. भाषा प्रायः शुद्धा, अर्थाच्चत् केचन दोषाः परिलक्षिताः। iii. शोधप्रारूपस्य सर्वे बिन्दवो गृहीताः। iv. शोधप्रस्तावः समसामयिकलोकोपयोगितासम्बद्धः स्यात्। v. कृतानां शोधकार्याणां विवरणं न प्रदत्तम्।	1- शोधशीर्षकं शैथिल्यमापन्निकोपयोगितादृष्ट्या परिष्कृत्य परिवर्त्य च शोधविधिमुत्सृत्य नूतनशोधप्रस्तावः प्रस्तोतव्यः। 2. शोधप्रस्तावः यथानिर्देशं संशोध्य विस्तरेण अस्यां दिशि कृतानां कार्याणां सर्वेक्षणविवरणेन सह प्रस्तोतव्यः। शोधकार्यस्य उपयोगितादृष्ट्या विस्तृतं विवरणमवश्यं प्रस्तोतव्यम्।
------------------	----------------------	-----------	---	---	--

17	HEMAN EK PANIGRAHI	Dr. Sudhakar Panigrahi	Sahitya	Shri Sadashiv Puri Campus	संस्कृतसाहित्यस्य विभागात् पण्डितगोविन्दचन्द्रमिश्रव्याख्या मवदानम्	i. भाषा शुद्धा वर्तते। केचन टड्कणदोषाः दृष्टाः। ii. उद्देश्येषु स्पष्टता नास्ति। iii. शोधप्रस्तावस्य शैक्षिकसमसामयिकलोकोपयोगिता स्यात्।	शोधशीर्षकं सर्वथा परिवर्तनीयम्। परिवर्तितस्य शोधप्रस्तावस्य नूतनप्रस्तावः शोधविधिमनुसृत्य प्रस्तोतव्यः।
----	-----------------------	------------------------------	---------	---------------------------------	---	--	--

18	D.D.S. Pune	Prof. Pankaj Mishra	Sahitya	Shri Sadashiv Puri Campus	किरातार्जुनीय व्यक्तित्वविकास - एकमध्ययनम्	<p>i. अनुसन्धानस्यौचित्यं सम्यक् न निरूपितम्।</p> <p>ii. अनुसन्धानस्योद्देश्यानि न लिखितानि सन्ति।</p> <p>iii. अनुसन्धानविधिः नोल्लिखितः।</p> <p>iv. अनुसन्धानसीमाङ्कनं न निर्दिष्टम्।</p> <p>v. अत्र शोधप्रस्तावे किरातार्जुनीयस्य व्यक्तित्वविषये प्रमाणम् उद्धरणं वा नोपन्यस्तम्।</p> <p>vi. अस्मिन् शोधप्रस्तावे शोधप्रारूपस्य कृते निर्धारितेषु बिन्दुषु विषयप्रस्तुतिः न कृतास्ति। यथा - प्रयोजनम्, सर्वेक्षणम्, औचित्यम्, शोधपद्धतिश्चेत्यादयः बिन्दवः न सन्ति।</p> <p>vii. शोधप्रस्तावस्य प्रस्तुतिः तथ्याधारेण नैव कृता अपितु शोधलेखरूपेण कृता वर्तते।</p>	<p>1. शोधशीर्षकं शैक्षिकसामाजिकोपयोगितादृष्ट्या परिष्कृत्य परिवर्त्य च शोधविधिमनुसृत्य नूतनशोधप्रस्तावः प्रस्ताव्यः।</p> <p>2. शोधप्रस्तावः यथानिर्देशं संशोध्य विस्तरेण अस्यां दिशि कृतानां कार्याणां सर्वेक्षणविवरणेन सह प्रस्तोतव्यः। शोधकार्यस्य उपयोगितादृष्ट्या विस्तृतं विवरणमवश्यं प्रस्तोतव्यम्।</p>
----	----------------	---------------------------	---------	---------------------------------	--	---	---

19	NIRAKAR PANDA		Sahitya	Shri Sadashiv Puri Campus	मुद्राराक्षस- चाणक्यविजयनाटकयोस्तुलना- त्मकमध्ययनम्	i. शोधप्रारूपमिदं भाषा दृष्ट्या समुचितं न प्रतीयते। ii. भाषायां बहवो दोषाः टङ्कणदोषाश्च सन्ति। यद्यपि शोधप्रारूपस्य सर्वेऽपि बिन्दवः अत्र गृहीताः। तथापि शोधप्रस्तावे समाहितेषु बिन्दुषु अपेक्षिताः सूचनाः अनुलिखिताः वर्तन्ते तत्र अनपेक्षितः विस्तारः अस्ति। iii. प्रस्तावे प्रयोजनं शोधकार्यस्य स्थाने नाट्यस्य निरूपितम्। iv. शोधप्रस्तावः समसामयिकलोकोपयोगितासम्बद्धः स्यात्।	शोधगोर्षकं सर्वथा परिवर्तनीयम्। परिवर्तितस्य शोधगोर्षकस्य नूतनप्रस्तावः शोधविधिमनुसृत्य प्रस्तोतव्यः।
----	---------------	--	---------	---------------------------------	---	---	--

PRAGNYA  
PARAMITA PATRA

Dr. Shubant  
Kumar Raj

Sahitya

शुद्ध  
साहित्य

संस्कृतभाष्यापरपर्यायस्य  
संनिष्पत्तितत्त्वालोकस्य  
समीक्षात्मकमध्ययनम्

- i. शोधप्रारूपमिदं समाप्तं भवति।
- ii. भाषा प्रायः शुद्धा भवति। किंचिद् दोषाः  
परिलक्षिताः।
- iii. इदं शास्त्रीयं कार्यम्।
- iv. शोधप्रस्तावः  
समसामयिकलोकोपयोगितासम्बद्धः स्यात्।

- 1- शोधशीर्षकं शैक्षिकसतः उपयोगितादृष्ट्या परिष्कृत्य परिवर्त्य  
च शोधविधिमनुसृत्य नूतनशाब्दप्रस्तावः प्रस्तोतव्यः।
2. शोधप्रस्तावः यथानिर्देशं मज्जोध्य विस्तरेण अस्यां दिशि कृतानां  
कार्याणां सर्वेक्षणविवरणेन सह प्रस्तोतव्यः। शोधकार्यस्य  
उपयोगितादृष्ट्या विस्तृतं विवरणमवश्यं प्रस्तोतव्यम्।



21	RESEARCH	RESEARCH	Sahitya	Shri Sadashiv Pari Campus	माधवकविप्रणीतस्य वीरभानूदयकाव्यस्य समीक्षात्मकं सम्पादनम्	<p>i. शोधप्रारूपमिदं समुचितं प्रतीयते।</p> <p>ii. टङ्कणदोषाः परिलक्षिताः।</p> <p>iii. शोधप्रारूपस्य केचन बिन्दवोऽत्र न गृहीताः।</p> <p>iv. मातृकासम्पादनेन सम्बद्धः अयं विषयः।</p> <p>v. शोधविधेः प्रतिपादने स्पष्टता नास्ति।</p> <p>vi. उद्देश्यानि व्यवस्थितरूपेण लेखनीयानि।</p>	<p>1. शोधशीर्षकं प्राथमिकमिकदृष्ट्या स्वीक्रियते। अनुसन्धानं यथानिर्देशं संशोध्य विस्तरेण अस्यां दिशि कृतानां कार्याणां सर्वेक्षणविवरणेन सह प्रस्तोतव्यः। शोधकार्यस्य उपयोगितादृष्ट्या विस्तृतं विवरणमवश्यं प्रस्तोतव्यम्।</p> <p>2. स्वीकृते शोधप्रस्तावे शोधच्छात्रः मार्गदर्शकः वा अनुसन्धानकाले इतोऽपि परिष्कारार्थं सयुक्तिं प्रस्तावं कर्तुमर्हति। शोधविकाससमितिः अत्र औचित्यं दृष्ट्वा निर्णयार्थं यथाविधि प्रक्रियाम् अग्रेसारयिष्यति।</p> <p>3. स्वीकृते शोधशीर्षकेऽपि विश्वविद्यालयस्य अधिकृता विशेषज्ञसमितिः शोधकार्यार्थम् इतोऽपि गुणवत्तामानेतुं परिष्कारार्थम् अनुसन्धानकालेऽपि निर्देष्टुमर्हति।</p>
----	----------	----------	---------	---------------------------	---	--	---

आर्यासप्तशत्याः  
प्रकाशिकाव्याख्यायाः  
समीक्षात्मकं सम्पादनम्

- i. शोधप्रारूपमिदं समुचितं वर्तते। शोधप्रारूपस्य प्रायशः सर्वेऽपि विन्दव्योऽत्र गृहीताः।
- ii. भाषागता अशुद्धयः सन्ति।
- iii. शोधपद्धतिः इत्यस्मिन् शीर्षके शोधकार्यार्थं प्रस्ताविता शोधपद्धतिः नोल्लिखिता वर्तते।
- iv. शोधोद्देश्यानि व्यवस्थितरूपेण न लिखितानि।

- 1- शोधशीर्षकं प्रार्थमिकमिकदृष्ट्या स्वीक्रियते। शोधप्रस्तावः यथानिर्देशं संशोध्य विस्तरेण अस्यां दिशि कृतानां कार्याणां सर्वेक्षणविवरणेन सह प्रस्तोतव्यः। शोधकार्यस्य उपयोगितादृष्ट्या विस्तृतं विवरणमवश्यं प्रस्तोतव्यम्।
2. स्वीकृते शोधप्रस्तावे शोधच्छात्रः मार्गदर्शकः वा अनुसन्धानकाले इतोऽपि परिष्कारार्थं सयुक्तिं प्रस्तावं कर्तुमर्हति। शोधविकाससमितिः अत्र औचित्यं दृष्ट्वा निर्णयार्थं यथाविधि प्रक्रियाम् अग्रेसारयिष्यति।
3. स्वीकृते शोधशीर्षकेऽपि विश्वविद्यालयस्य अधिकृता विशेषज्ञसमितिः शोधकार्यार्थम् इतोऽपि गुणवत्तामानेतुं परिष्कारार्थम् अनुसन्धानकालेऽपि निर्देष्टुमर्हति।

रमानन्दठक्करप्रणीत-  
रसतरङ्गिण्या. समीक्षात्मकं  
सम्पादनम्

- i. विषयदृष्ट्यायं शोधविषयस्तु समुचितो वर्तते।
- ii. नैकेषु स्थलेषु भाषासम्बन्धिनः दोषाः सन्ति।
- iii. टङ्कणकार्ये अपि बहुत्र दोषाः सन्ति।
- iv. शोधप्रस्तावे शोधपद्धतिः, शोधप्रकृतिः, शोधस्य सम्भावितफलतांशश्चेत्यादयः बिन्दवः तदनुकूलतथ्येन रहिताः सन्ति अतः पुनः लेखनीयाः।
- v. सन्दर्भग्रन्थसूच्यां केचन एव ग्रन्थाः प्रदत्ताः।
- v. मातृकासम्पादनात्मकमिदं कार्यम्।

- 1- शोधशीर्षकं प्राथमिकमिकदृष्ट्या स्वीक्रियते। शोधप्रस्तावः यथानिर्देशं संशोध्य विस्तरेण अस्या दिशि कृतानां कार्याणां सर्वेक्षणविवरणेन सह प्रस्तोतव्यः। शोधकार्यस्य उपयोगितादृष्ट्या विस्तृतं विवरणमवश्यं प्रस्तोतव्यम्।
2. स्वीकृते शोधप्रस्तावे शोधच्छात्रः मार्गदर्शकः वा अनुसन्धानकाले इतोऽपि परिष्कारार्थं सयुक्तिं प्रस्तावं कर्तुमर्हति। शोधविकाससमितिः अत्र औचित्यं दृष्ट्वा निर्णयार्थं यथाविधि प्रक्रियाम् अग्रेसारयिष्यति।
3. स्वीकृते शोधशीर्षकेऽपि विश्वविद्यालयस्य अधिकृता विशेषज्ञसमितिः शोधकार्यार्थम् इतोऽपि गुणवत्तामानेतुं परिष्कारार्थम् अनुसन्धानकालेऽपि निर्देष्टुमर्हति।

24	DEBI PRASAD SAHOO	Prof. Gauri Priya Dash	Na. Prasad	Shri Sadashiv Puri Campus	योगशास्त्रेषु नादानुसन्धानमेकं समीक्षात्मकमध्ययनम्	i. नादपदं स्पष्टीकर्तव्यम्। ii. अस्य अध्ययनस्य उद्देश्यानि सम्बद्धानि न सन्ति। iii. शोधनिष्पत्तिः research Out come न दर्शिता। iv. अनुसन्धानमिदम् अपूर्वमिति न प्रदर्शितम्। v. बहुषु स्थलेषु भाषासम्बन्धिन्यः अशुद्ध्यः दृष्टाः। vi. विषयप्रतिपादने अपेक्षितस्पष्टता नास्ति। vii. शोधप्रस्तावः समसामयिकलोकोपयोगितासम्बद्धः स्यात्।	शोधशीर्षकः सर्वथा परिवर्तनीयम्। परिवर्तितस्य शोधशीर्षकः नूतनप्रस्तावः शोधविधिमनुसृत्य प्रस्तोतव्यः।
----	----------------------	---------------------------	------------	---------------------------------	---	---	--

P. LISHI KUMAR SRIKAPATHY	Dr. Ashok Kumar Meena	Sankhyayog	Shri Sadashiv Puri Campus	श्रीकुलार्णवतन्त्रदृष्ट्या योगतत्त्वानामनुशीलनम्	<p>i. शोधोद्देश्यानि न लिखितानि। ii. शोधौचित्यम् अस्पष्ट विद्यते। iii. शोधविधिर्न दर्शितः। शोधसीमाङ्कनं न विहितम्। iv. शोधनिष्पत्तिः research Out come नोल्लिखिताः। vi. क्वचिद् भाषाऽशुद्धिः परिलक्षिता। vii. शोधप्रस्तावः समसामयिकलोकोपयोगितासम्बद्धः स्यात्।</p>	शोधशीर्षकं सर्वथा परिवर्तनात्पि । परिमूर्तितस्य शोधशीर्षकस्य नूतनप्रस्तावः शोधविधिमनुसृत्य प्रस्तानव्यः ।
------------------------------	-----------------------------	------------	---------------------------------	---	--	--

26	RANJITA PRADHAN	Dr. Achal Kumar Meena	Sankhyayog	Shri Sadashiv Puri Campus	संस्कृतरामायणेषु योगतत्त्वानुशीलनम्	<p>i. शोधप्रारूपमिदं समुचितं न वर्तते।</p> <p>ii. शोधप्रारूपस्य सर्वे बिन्दवः नैव गृहीताः। भाषा नितान्तम् अशुद्धा वर्तते।</p> <p>iii. शास्त्रीयविषयत्वात् दर्शनानुसन्धानस्य गाम्भीर्यम् अपेक्षितम्।</p>	<p>1- शोधशीर्षकं शैक्सामाजिकोपयोगितादृष्ट्या प्राग्जन्य प्राग्जन्यं च शोधविधिमनुसृत्य नूतनशोधप्रस्तावः प्रस्तोतव्यः।</p> <p>2. शोधप्रस्तावः यथानिर्देशं संशोध्य विस्तरेण अस्यां दिशि कृतानां कार्याणां सर्वेक्षणविवरणेन सह प्रस्तोतव्यः। शोधकार्यस्य उपयोगितादृष्ट्या विस्तृतं विवरणमवश्यं प्रस्तोतव्यम्।</p>
----	-----------------	-----------------------	------------	---------------------------	-------------------------------------	---	---

27	ABHAY DEHURY	Dr. Nandi Ghosh Mahapatra	Sarvashiksha	Shri Sudashini Puri Campus	<p>महामहोपाध्यायभद्रेशदासाचार्य विरचिते कठोपनिषद्भाष्ये भाष्यान्तराणां प्रभावः</p>	<p>i. शोधविधि न उल्लिखितः। ii. अनेन अनुसन्धानेन सम्भाविता शोधनिष्पत्तिः (Research out come) का भविष्यति। इति सूचनीया। iii. शोधप्रस्तावस्य कलेवरः अनुकृतः (अन्यस्मात् गृहीतः) इति प्रतिभाति। iv. शोधप्रस्तावः समसामयिकलोकोपयोगितासम्बद्धः स्यात्।</p>	<p>शोधशीर्षकं सर्वथा परिवर्तनीयम्। परिवर्तितस्य शोधशीर्षकस्य नूतनप्रस्तावः शोधविधिमनुसृत्य प्रस्तोतव्यः।</p>
----	--------------	---------------------------------	--------------	----------------------------------	--	--	--

28		Dr. Nandi Ghosh Mahapatra	Sarvadarshan	Shri Sadashiv Puri Campus	वेदान्तपरम्परायां महामहोपाध्यायभद्रशदासविर- चितस्मृतिप्रस्थानस्य समीक्षात्मकमध्ययनम्	i. शोधविधिः न उल्लिखितः। ii. शोधनिष्पत्तिः Research Out come न दर्शिता। iii. अस्य भाष्यस्य न किञ्चित् उद्धरणं प्रदत्तम्। iv. शोधप्रस्तावः समसामयिकलोकोपयोगितासम्बद्धः स्यात्। v. वेदान्तपरम्परायाम् अस्यां दिशि पूर्वकार्याणां सर्वेक्षणविवरणं दर्शनीयम्।	1- शोधशीर्षकं शैक्षिकसामाजिकोपयोगितायां परिष्कृत्य परिवर्त्य च शोधविधिमनुसृत्य नूतनशोधप्रस्तावः प्रस्तातव्यः। 2. शोधप्रस्तावः यथानिर्देशं संशोध्य विस्तरेण अस्यां दिशि कृतानां कार्याणां सर्वेक्षणविवरणेन सह प्रस्तोतव्यः। शोधकार्यस्य उपयोगितादृष्ट्या विस्तृतं विवरणमवश्यं प्रस्तोतव्यम्।
----	--	---------------------------------	--------------	---------------------------------	---	---	---



29	KADALAXMI SAHOO	Prof. Gauri Priya Dasb.	Shri Sadashiv Puri Campus	स्वभावकविगङ्गाधरमेहेरप्रणी तानाम् उत्कलीयकाव्यानां दार्शनिकमध्ययनम्	i. भाषा शब्दा न वर्तते। ii. शोधप्रारूपस्य बिन्दवः सुष्ठु नोद्धाटिताः। iii. विषयः अनुसन्धानाय समीचीनः नास्ति।	शोधशीर्षकं सर्वथा परिवर्तनीयम् । परिवर्तितस्य शोधशीर्षकस्य नूतनप्रस्तावः शोधविधिमनुसृत्य प्रस्तोतव्यः ।
----	--------------------	----------------------------	---------------------------------	---	--	--

	Author Name	Prof. Lalit Kumar Sahoo	Veda	Shri Sadashiv Puri Campus	याज्ञवल्क्यस्मृत्यग्रहशान्तेः प्रासङ्गिकतोपादेयता च	i. शोधविधिः अनुपयुक्तः विद्यते। ii. शोधफलानि न दर्शितानि। iii. शोधोद्देश्यानि न लिखितानि। iv. भाषापरिहारोऽपेक्षितः विषये च स्पष्टताऽपेक्षिता। v. शोधप्रविधिविषयेऽपि स्पष्टताऽपेक्षिता।	शोधशीर्षकं सर्वथा परिवर्तनीयम् । परिवर्तितस्य शोधशीर्षकस्य नूतनप्रस्तावः शोधविधिमनुसृत्य प्रस्ताव्यः ।
--	-------------	----------------------------	------	---------------------------------	--	--	---

---

### **Priorities and Thrust Areas for Research**

- The CSU will identify the priorities and thrust areas of research in consultation with the respective various institutional committees, and other concerned councils. The priorities and thrust areas of research need to be conducted systematically along with the details of facilities, availability of funding/scholarship/incentives/fellowships and infrastructure available for undertaking research in these areas.
- The CSU will prioritise the research regarding **Research Projects, Publications, Intellectual Property Rights (IPR), and Manuscripts Repository.**
- The following are the priorities and thrust areas, as well these are subjects to review from time to time:
  1. **Manuscripts Editing and Preparation of Critical Editions**
    - Critical editing under editing principles and rules.
    - Critical Review of published and unpublished manuscripts.
    - Preparation of critical edition of a single available manuscript.
    - Special editions with translation in Sanskrit, Hindi, English and other language.
    - The Sharing, collecting, purchasing, digitizing, and acknowledging the manuscripts resulting as **IPRs and patents** - all these pursuits will be performed in Ganganath Jha Campus, Prayagraj.
  2. **Indian Knowledge Traditions and their Application**
    - Research on contemporary problems, challenges, and issues in the context of most enriched traditions of Indian Knowledge Traditions.
    - Some Research related to Indian Knowledge Traditions are expected as Scientific and fundamental research engaging in different areas leading to new theories.
    - Research focussing on correlative studies with these concerns and domains of Indian Knowledge Traditions.
    - Research dealing with ancient history, archaeology, museology, Vedic agriculture, traditions of medicines, healthcare, and so on are the top priorities of CSU.
    - **Any theme related with other Shastric discipline** - Interdisciplinary and multidisciplinary research on allied branches of Sanskrit Knowledge System.
    - **Critical discourse analysis of Sanskrit Language** - Analysis of Sanskrit Language with other Indian and foreign languages which is based on growing interdisciplinary research movement
    - **Information and Communication Technology based Themes and Areas** - Computational Linguistics and Traditional Studies, Natural Language Processing, Technological Experiments based Research, i.e., development of technological resources for teaching of Sanskrit, Development of Tools, and Software for learning and optimum utilisation of Sanskrit Knowledge System.
  3. **Review of Criticism of Indian Knowledge Traditions**
    - Review of Indian Shastric Literature.
    - Evaluation of theory formulations and propagations performed by colonial approaches.

- Criticism of prior publications and propagations by modern commentators and Scholars.

#### 4. **Historical, Descriptive and Experimental Research**

- The main focus of educational research should be on National Education Policy 2020. The areas for educational research may be accepted as National Curriculum Framework, New Curricula, Pedagogical Experiments, and enhancement of Sanskrit Teaching-Learning Practices, which are directly interconnected with National Education Policy 2020.
- The educational research must deal with new paradigm shifting towards medium of mother language and its impact on teaching-learning practices that also result in new possibilities and innovations in Sanskrit Education.
- The historical educational research should deal with ancient Indian history and educational systems of India. The qualitative research methodology should be adopted to study these educational phenomena.
- The descriptive survey-based research focussed the trends, challenges, problems, and issues of Sanskrit and Sanskrit Education to understand the cross-cutting socio-cultural aspects.
- The experimental educational research should deal with teaching methodologies, especially the Indic methods to teach humanities and science subjects. Similarly, some studies to develop Bharatiya research methodologies should be encouraged, recommended, and endorsed.